भगत नामदेव – सबद ३९

पर धन पर दारा परहरी ॥

रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६३

पर धन पर दारा परहरी ॥
ता कै निकटि बसै नरहरी ॥१॥
जो न भजंते नाराइणा ॥
तिन का मै न करउ दरसना ॥१॥ रहाउ ॥
जिन कै भीतरि है अंतरा ॥
जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥२॥
प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥
ना सोहै बतीस लखना ॥३॥२॥

सार: लोभ न करना मूल नैतिक आधार है जो मन को गरिमा और आत्म-सम्मान के साथ स्थिर रहने में मदद करता है। यह नैतिक संयम, नेक नीयत और शोषण से मुक्ति को दर्शाता है। जब मन दूसरों की संपत्ति, संबंध, प्रतिष्ठा या अधिकार की लालसा छोड़ देता है, तब वह भीतर से हल्का, निर्मल और स्थिर हो जाता है। ऐसा संयम आध्यात्मिक परिपक्वता और उचित सीमाओं का सम्मान करने के संकल्प को दिखाता है। दिव्यता ऐसे ही लोगों के निकट आती है क्योंकि शांति लालच, तुलना या दूसरों के शोषण से नहीं पनप सकती।

पर धन पर दारा परहरी ॥
दूसरों के धन और दूसरों के साथी के प्रति इच्छा का त्याग करने का आह्वान है। यह लोभ-लालच न करने के उस मूल नैतिक आधार को बताता है जो मन को गरिमा और आत्म-सम्मान के साथ स्थिर रखने के लिए ज़रूरी है।

ता कै निकटि बसै नरहरी ॥१॥

ऐसे व्यक्ति के पास नरहरी जो आध्यात्मिक शक्ति, भक्ति और धर्मनिष्ठा का प्रतीक हैं, निवास करते हैं। यह दर्शाता है कि दिव्यता स्वाभाविक रूप से नैतिक जीवन की ओर चुंबक की तरह आकर्षित होती है। (१)

जो न भजंते नाराइणा ॥

जो लोग सर्वव्यापी चेतना से नहीं जुड़ते। यह जीवन की उस दिशा को दर्शाता है जिसमें ध्यान कभी भी एकत्व की ओर नहीं जाता।

तिन का मै न करउ दरसना ॥१॥ रहाउ ॥

मैं उनसे कोई संबंध नहीं रखता। यह निर्णय इस बात को रेखांकित करता है कि हमारे विचार और हमारी संगति दोनों ही हमारी चेतना और जीवन-दृष्टि को गहराई से प्रभावित करते हैं। (१)(विराम)

जिन कै भीतरि है अंतरा ॥

जिनके भीतर द्वैत है, वह बाहर से कुछ और, भीतर से कुछ और होते हैं। यह उस मानसिक विभाजन का चित्रण है जिसमें व्यवहार और उद्देश्य एक-दूसरे से मेल नहीं खाते।

जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥२॥

ऐसे लोग मनुष्य होकर भी पशु-समान हैं। वह बाहरी तौर पर तो मनुष्य जैसे दिखते हैं लेकिन बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया देते हैं जिससे उनमें सामंजस्य की कमी होती है और उनकी मानवीय क्षमता का सही इस्तेमाल नहीं होता। (२)

प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥

नामदेव विनम्रता से कहते हैं, नाक के बिना। यह नैतिकता या चरित्र की कमी को दर्शाने वाला रूपक है जहाँ 'नाक' मर्यादा और आत्म-सम्मान का प्रतीक है।

ना सोहै बतीस लखना ॥३॥२॥

बत्तीस गुण अच्छे नहीं लगते। इसका तात्पर्य है कि सौन्दर्य, ज्ञान और प्रतिभा तभी सार्थक हैं जब उनका आधार चरित्र और नैतिकता हो। (३)(२)

तत्त्व: भक्त नामदेव बताते हैं कि हमारे पास ऐसी सुंदरता हो सकती है जो लोगों को आकर्षित करे और ऐसा ज्ञान जो हमें सम्मान दिलाए लेकिन इनमें से कुछ भी हमारा वास्तविक मूल्य तय नहीं करता। बिना नैतिक आधार के, सुंदरता घमंड में बदल सकती है और ज्ञान का दुरुपयोग अहं के लिए किया जा सकता है। हमारी वास्तविक पहचान सत्य, धर्म और ईमानदारी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता से निर्मित होती है। जब विनम्रता और विवेक जुड़ते हैं और हमारे बाहरी गुण हमारे भीतरी सत्य का प्रतिबिंब बनते हैं, तभी वह हमारे चरित्र को ऊँचा उठाते हैं और हमारी उपलब्धियों को वास्तविक अर्थ प्रदान करते हैं। जीवन का सही मापदण्ड यह नहीं कि हमारे पास क्या है बल्कि यह है कि हमारे गुण सत्य, करुणा और समस्त प्राणियों के कल्याण में कितना योगदान देते हैं। ऐसे गुणों से जुड़कर जीवन में ऐसी आभा आती है जो किसी भी बाहरी उत्कृष्टता से कहीं अधिक उज्ज्वल होती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com